International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 2, March 2022 |

रश्मि भारद्वाज की कविताओं में नारी संवेदना

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor in Hindi, S.P.N.K.S. Govt. PG College, Dausa, Rajasthan, India

सार

महिलाओं के दुख, दर्द, त्याग, तप, सहनशीलता, संघर्षशील जीवन, उच्च आदर्शों तथा लैंगिक भेदभाव पर हिन्दी साहित्य विशेषकर काव्य जगत में बहुत कुछ लिखा गया है जिसका सिलसिला आज भी जारी है।

इस श्रंखला में रश्मि भारद्वाज की कविताओं में नारी की व्यथा कथा का जो चित्रण है, वह अन्यत्र दिखाई नहीं देता। उनकी कविताओं में नारी शक्ति इतनी व्यथित है कि वह स्त्री के साथ भेदभाव का दोषी ईश्वर को मानती है-

'ईश्वर, लेकिन अब चिंता की बारी तुम्हारी है
वह इनकार कर रही है तुम्हारी उस सत्ता को मानने से
जो इतनी सी उम्र में ही उसे बेवजह का भार सौंपती है
वह हमउम्र लड़कों का मुक्त किलकना देखती है
बार-बार पूछती है
इनके हिस्से कौन सा दर्द है
घोषित करती है
कि पक्षपाती है यह ईश्वर
जिसकी सृष्टि का सारा करतब'

परिचय

रश्मि भरद्वाज ने स्त्री जीवन की महीनता को अनुभव के साथ लिखा है जिसे पढ़ते हुए महसूस किया जा सकता है। उनकी कविताएँ हमें ठहरकर, सोचने पर विवश करती हैं। यहाँ कुछ भी ऐसा नहीं जिसे पढ़ा न जाए, सब कुछ तो बार-बार पढ़ने का मन करता है।[1] कुछ नहीं, बहुत-सी पंक्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें दिमाग के किसी हिस्से में हमेशा के लिए सँजोने का मन करता है। कई अवसर ऐसे आते हैं, जब हम इतने भावुक हो उठते हैं कि भावनाएँ हमें जकड़ लेती हैं। एक तरह से ख़ुद में बँध जाते हैं; कोई शब्द नहीं, स्थिर, शून्य से।रश्मि भरद्वाज की चीज़ों को नापने की कुशलता उसी समाज से आई है जहाँ ज़िन्दगी के उतार-चड़ाव वाले किस्से-कहानियाँ खुरदरे-चिकने मैदानों पर तैरते हैं। वहीं स्त्री-पुरुष संसार के अलग-अलग रंगों में ख़ुद को भिगोते हैं, और जीवन के नये अध्याय रचते हैं- जीवन यही है। इसी जीवन के संगीत में सुबह-शाम के नज़ारे हैं। रश्मि भारद्वाज वहाँ बिखरी खामोशियों, ख्वाहिशों, उम्मीदों को चुनकर प्रस्तुत करती हैं। उनके सवाल भी हैं, जिन्हें हर स्त्री जानना चाहती है। उत्तर भी हैं, जो शायद आजतक अनुत्तरित हैं।रश्मि भारद्वाज की कविताओं में सुकून है। उनका काव्य संग्रह 'मैंने अपनी माँ को जन्म दिया है' बेहद खूबसूरती से रचा गया है। यकीनन आपको हर कविता मखमली-सी लगेगी या यों कहें उनके काव्य से प्यार कर बैठेंगे। बहुत ही सुन्दरता से उन्होंने एक-एक पंक्ति को लिखा है, जिसे पढ़ना मन को राहत देता है। रश्मि भारद्वाज का उपन्यास 'वह सन बयालीस था' , प्रवीण कुमार का 'अमर देसवा' जैसी कृतियाँ भी बेहद महत्वपूर्ण हैं जिन्हें पढ़कर भुलाया नहीं जा सकता.[2]

वह जो असाधारण स्त्री है
वह तुम्हारे प्रेम में पालतू हो जाएगी
उसे रुचिकर लगेगी वनैले पशुओं-सी तुम्हारी कामना
रात्रि के अंतिम प्रहर में
तुम्हारे स्पर्श से उग आएगी उसकी स्त्री
पर उसे नहीं भाएगा
यह याद दिलाए जाना
सूर्य की प्रतीक्षा के दौरान
तुम्हें प्रेम करते हुए
वह त्याग देगी अपनी आयु
अपनी देह
तुम देख सकोगे

उसकी अनावृत आत्मा
बिना किसी शृंगार के

वह इतनी मुक्त है
कि उसे बाँधना
उसे खो देना है
वह इतनी बँधी हुई है
कि चाहेगी उसकी हर श्वास पर
अंकित हो तुम्हारा नाम

तुम्हारे गठीले बाज़ू
उसे आकर्षित कर सकते हैं
पर उसे रोक रखने की क्षमता
सिर्फ़ तुम्हारे मस्तिष्क के वश में है
तुम्हारे ज्ञान के अहंकार से
उसे वितृष्णा है
वह चाहती है
एक स्नेही, उदार हृदय
जो जानता हो झुकना

उस स्त्री का गर्वोन्नत शीश
नत होगा सिर्फ़ तुम्हारे लिए
जब उसे ज्ञात हो जाएगा
कि उसके प्रेम में
सीख चुके हो तुम
स्त्री होना

विचार-विमर्श

स्त्री कविता में दुख, मुक्ति और स्वाभिमान के प्रश्न विस्थापन, पर्यावरण और सहकारिता के बृहत्तर प्रश्नों से टकराते हुए किस तरह से महीन और जटिल हुए हैं-इसकी बानगी आपको इस संग्रह की अधिकांश कविताओं के भाषिक अवचेतन में मिलेगी! एक-एक वाक्य साँस की तरह सधा हुआ, बिंब सांद्र और सचेत, टोनल वैविध्य नागर चेतना के अनुकूल और विडंबनाबोध उत्कट-इतनी सारी विशेषताएँ किसी कवि में दूसरे संग्रह में ही उभर आएँ तो उसकी चेतना का धरातल निश्चित ही उन्नत होता है! रश्मि चौथी पीढ़ी की स्त्री-कविता में विशिष्ट स्थान इसलिए भी रखती हैं कि इनमें ठहर कर सोचने का शील है और सोच-समझ लेने के बाद अत्यंत निर्भीकता से सच उचार देने की ईमानदारी भी। उग्र प्रतिक्रियावाद में ये भरसक नहीं पड़तीं और सत्य के सारे आयाम पूरे धीरज और विनय से उजागर कर देती हैं। हिंदी-अंग्रेज़ी-दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाली रश्मि की विश्वदृष्टि व्यापक और परिपक्व है पर अपने आसपास बिखरे जीवन से जो संदर्भ ये उठाती हैं [3]उनमें तुरंत उखड़े पौधे के रेशों में फँसी गीली मिट्टी का मार्मिक स्पर्श है और वैसी ही सांद्र, मटियाली गंध भी : 'सुख बायीं आँख में भूल से पड़ आया एक कंकड़ है जो ढेर सारे पानी के साथ बह आएगा।' अपने दम-खम पर महानगर में अकेली जीने वाली स्वाभिमानी स्त्रियाँ और युवा माताएँ जो कविताएँ लिख रही हैं-उसमें दिनभर की भाग-दौड़ से निबटने के बाद अंत में बचा वह सन्नाटा है जिसमें अपनी धड़कनें सुनाई देती रहें, उनकी उदासी का रंग 'इतवार की ढलती दुपहरी सा' है, पर बावजूद इन सबमें वह नैतिक ओजस्विता है और अद्भुत त्वरा भी है जो धरती को अपने तिरछे या बंकिम अक्ष पर लगातार घूमते चले जाने का दम-खम देती है। हिंदी कविता में महादेवी वर्मा के बाद लगभग चौथी पीढ़ी ने स्त्री कविता को एक सशक्त और अर्थपूर्ण पहचान दी है और इसमें कोई शक नहीं कि रश्मि भारद्वाज आज इस पीढ़ी का एक अग्रणी नाम हैं। फेसबुक युग ने इस पीढ़ी को एक अधिक संवादी और स्वतंत्र मंच दिया है। पहली बार ऐसा हुआ है कि हिंदी में पुरुष कविता स्त्री कविता के मुक़ाबले कमज़ोर नज़र आ रही है। रश्मि में सोचने का एक नया नज़रिया, कविता का वैश्विक कैनवस, अपेक्षाकृत पिछड़े भारतीय माहौल में स्त्री के हितों की रक्षा के प्रति सजगता, भाषा का अद्भुत निखार, बोल्डनेस का सार्थक स्वरूप हमें मिलता है। लातीनी अमेरिकी कवि बोरखेस ने कहा था कि हर रचनाकार अपना पूर्ववर्ती स्वयं रचता है। रश्मि अपनी माँ को जन्म देती हैं, तो उसे भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा और जाँचा जा सकता है। उनकी बोल्ड अभिव्यक्ति में भी अकविता के दौर की लिजलिजी कुंठा नहीं है, सेक्स और यौनिकता की सार्थक अभिव्यक्ति है। मसलन योनि श्रृंखला की कविताएँ नयी स्त्री के एक गहरे सोच और मार्मिक समझ का अद्वितीय दस्तावेज़ हैं और इसे संवेदनशील और अर्थपूर्ण ढंग से परिभाषित करती हैं। रश्मि की इन कविताओं में कन्फेशनल या स्वीकारोक्ति कविता की स्पष्ट और निर्भीक दुनिया है। रॉबर्ट लोवेल, सिल्विया प्लाथ, गिंज़बर्ग आदि अंग्रेज़ी कवि इस तरह की सशक्त कविताओं के लिए मशहूर हैं। गौर करने की बात यह भी है कि इस संग्रह में

प्लाथ पर एक कविता भी है। रश्मि के इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ इसी टोन का अद्भुत ढंग से इस्तेमाल करती हैं। रश्मि में उल्लसित क़िस्म का आशावाद नहीं है, लेकिन आज कोई भी रचनाकार 'बुद्धि का निराशावाद और संकल्पशक्ति का आशावाद' (अनातोले फ्रांस) के मूलमंत्र से ही किसी सार्थक राह को पकड़ सकता है। यह संग्रह निश्चय ही पाठक को एक निजी जीवन की गहरी काव्यात्मक दुनिया में ले जाएगा।

पितृ सत्ता के विभिन्न अवयवों- धर्म, समाज, परिवार आदि के जरिये सदियों से स्त्री पर पूर्ण आधिपत्य के लिए उसकी यौनिकता का दमन होता आया है। स्त्री की देह पर अंकुश लगाकर, उसकी सहज मानवीय इच्छाओं को नियंत्रण में रख पुरुष की तुलना में उसे दोयम दर्जे का नागरिक बना कर रखना सभ्य कहे जाने वाले समाज की सुनियोजित रणनीति रही है। इसलिए ताकि वंश, परिवार और समाज की शुद्धता कायम रहे, पितृ सत्ता का एकछत्र अधिकार बना रहे। स्त्री सशक्तीकरण के लिए सदियों के निरंतर संघर्ष के बाद स्त्रियों ने न सिर्फ शिक्षा, आर्थिक समानता, परिवार में श्रम का विभाजन, राजनीतिक अवसरों की समानता आदि प्राप्त की बल्कि अपनी देह पर पूरे अधिकार के लिए भी मुखर हुईं। क्योंकि वे स्पष्ट देख पा रही थीं कि किस तरह उनकी देह को ही उनका कारागार बना दिया गया। देह मुक्ति के साथ चयन के अधिकार की मांग भी लगातार उठती रही, जो अब भी जारी है। हालांकि जिस तरह से मुक्ति शब्द भ्रामक है, चयन का अधिकार भी अपने अंदर कई प्रश्न समेटे हुए है। पितृ सत्ता चालाक और ताकतवर है। सदियों से उसकी कोशिश रही है कि वह स्त्री को देह तक सीमित रखकर हर तरह से उसका उपभोग करता रहे। पितृ सत्ता नहीं चाहती कि स्त्री भी समान मस्तिष्क की तरह कभी विकसित हो।

उसने बड़ी चालाकी से अपने फायदे के लिए स्त्रियों को उनकी मुक्ति और चयन के अधिकार का भ्रम देकर शोषण का नया तंत्र विकसित कर लिया। स्त्रियों के शरीर को हमेशा से उत्पाद की तरह इस्तेमाल करने वाला बाजार, अब स्त्री यौनिकता से जुड़े संवेदनशील मुद्दों को भी अपने व्यावसायिक फायदे के लिए भुनाने में लगा है। देह मुक्ति और शोषण के बीच का यह अंतर इतना सूक्ष्म है कि स्त्री को पता ही नहीं चलता कि कब वह खुद को एक और नारकीय कारागार में कैद कर लेती है, जहां उसे मनुष्य की तरह नहीं, सेक्स ऑब्जेक्ट की तरह इस्तेमाल किया जाने लगता है।

हाल ही ऑर्गेज्म पर छिड़ी बहस नई नहीं है। इसमें सिर्फ स्त्री यौनिकता के प्रश्न समाहित नहीं, बल्कि उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव भी शामिल हैं। इन मुद्दों को बाजार और त्वरित सफलता पाने की महत्वकांक्षा के तहत भुनाने से भरसक बचते हुए इन पर संजीदगी से विचार और संवाद किए जाने की जरूरत है।

साथ ही यह भी ध्यान रखे जाने की जरूरत है कि चयन के अधिकार के तहत एक मुक्तचेत्ता स्त्री की प्राथमिकता क्या होनी चाहिए, जिससे गांव-कस्बों की वंचित स्त्रियों को भी अधिकतम लाभ मिल सके। अभी हमारे समाज में स्त्रियों को शिक्षा, पसंद का जीवनसाथी चुनने, पौष्टिक भोजन, प्रसूति और स्वास्थ्य सुविधा, नौकरी आदि तक की आजादी नहीं है। आज भी यहां प्रेम करने के लिए स्त्रियों को सरेआम मौत के घाट उतार दिया जाता है। ऐसे समाज में विवाहेतर संबंध वाले डेटिंग ऐप पर 'ऑर्गेज्म' खोजने, जहां से भी मिले वहां से शारीरिक सुख ले लेने की मानसिकता क्या उन लाखों लड़कियों के आगे बढ़ते कदमों पर जंजीर नहीं लगवा देंगी, जो मुश्किल से पढ़ने-लिखने की स्वतंत्रता पा सकी हैं। कहीं ऐसा न हो कि स्त्रीवाद के इस अराजक स्वरूप से डरा निम्न या आम मध्यम वर्गीय परिवार अपनी बेटी या बहन की सामान्य आजादी पर भी सात ताले जड़ दे।

यह अच्छी बात है कि अब स्त्रियां भी शारीरिक सुख के लिए सजग हो रही हैं और लेकिन यह सुख पाने का सबसे बेहतर तरीका है साथी के साथ स्वस्थ संवाद, समझदारी या जरूरत पड़ने पर सेक्सलॉजिस्ट/काउंसलर की सलाह। देह सुख की सीमा क्या हो, यह स्वस्थ समाज को तय करना होगा। इसमें परिवार और जीवनसाथी के प्रति प्रतिबद्धता दोनों जेंडर पर समान रूप से लागू है। यदि किसी कारणवश दैहिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती, तो उसका निवारण कम से कम डेटिंग साइट पर बने अवैध संबंध तो कतई नहीं हो सकते। यह तो एक नए शोषण तंत्र का आरंभ ही होगा।

ऑर्गेज्म की अनुभूति जितनी शारीरिक है, उससे कहीं अधिक यह सुख मानसिक संतुष्टि से जुड़ा हुआ है। देह सुख मन या दिमाग से अलग कर पाना कठिन है, खासकर स्त्रियों के लिए। अमूमन स्त्रियां उसी साथी के साथ देह सुख की अनुभूति कर पाती हैं, जो उनके मन को समझता हो, उसकी जरूरतों के लिए संवेदनशील हो और अपनी पार्टनर को बराबरी का मनुष्य मानता हो। प्रेम और समझदारी से पनपे ऐसे संबंध ही स्त्री-पुरुष को एक धरातल पर ला सकते हैं, उनके बीच स्वस्थ मानसिक और शारीरिक संवाद स्थापित कर सकते हैं।[4]

परिणाम

समान नागरिक अधिकारों, संसाधनों एवं अवसरों की समानता एवं स्त्री को मनुष्य समझे जाने के लिए संघर्ष करता स्त्रीवाद एक लंबा सफर तय कर चुका है। आर्थिक, शैक्षणिक, नागरिक अधिकारों के क्षेत्र में स्त्री की स्थिति बहुत सुदृढ़ हो चुकी है, लेकिन स्त्रीवाद के संघर्ष एवं इसके मूल उद्देश्यों की सही जानकारी नहीं होने के कारण सामाजिक स्तर पर इसकी स्थिति बहुत विवादास्पद हो चुकी है। एलीट या अभिजात्य वर्ग के 'फैशनेबल फेमिनिज्म' ने इसे हास्यास्पद भी बना दिया है। ऐसे हालात में यह जानना जरूरी हो जाता है कि स्त्रीवाद की जरूरत किसे है। फेमिनिज्म या स्त्रीवाद, हाशिए पर पड़ी उन तमाम स्त्रियों, लड़कियों के लिए है, जो अब तक शिक्षा तक के अधिकार से वंचित हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 2, March 2022 |

जो बाल विवाह और अन्य सभी कुरीतियों, पाखंडों का शिकार हैं। जो अब भी मासिक और प्रसूति की शारीरिक समस्याएं झेलती असमय मौत का शिकार हो जाती हैं। फेमिनिज्म या स्त्रीवाद उनके लिए है, जो महानगरों, शहरों में अपनी अस्मिता की लड़ाई के लिए सुबह-शाम सड़कों, कार्यालयों, बसों, मेट्रो में धक्के खाती हैं। फेमिनिज्म या स्त्रीवाद उनके लिए है, जो शिक्षित और संभ्रांत परिवार से होने के बावजूद हर निर्णय के लिए पिता, पति और पुत्र का ही मुंह जोहती हैं। जिनके लिए ऐशो-आराम के साधन तो जुटा दिए जाते हैं, पर जिनकी स्थिति पिंजरे की मैना सी होती है, जो खुद भी पितृ सत्ता की एजेंट बन जाती हैं। इन सबसे इतर एक 'अभिजात्य फेमिनिज्म' भी है जिसकी अराजक 'माई चॉइस' की रट सिर्फ स्त्रीवाद के मूल संघर्ष को ही हाशिए पर नहीं डालती, स्त्री के मनुष्य समझे जाने के अधिकार की भी धज्जियां उड़ा देती है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के बीच की विभाजन रेखा बहुत महीन है। चयन का अधिकार हर मनुष्य का नागरिक अधिकार होना चाहिए, लेकिन हर चयन स्त्रीवाद के संघर्ष के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता। मसलन सिगरेट, शराब, सेक्स संबंध किसी का व्यक्तिगत निर्णय है। अगर एक स्वस्थ समाज ने अपने विकास के लिए इनसे जुड़े कुछ अघोषित नियम बना रखें हैं, तो वह सभी पर लागू होते हैं।

निष्कर्ष

कविता के लिए मुख्य रूप से एक दृष्टि की जरूरत होती है. शायद इसी के मद्देनजर कभी रसूल हमजातोव ने कहा था कि ' यह मत कहो कि मुझे विषय दो, यह कहो कि मुझे आँखें दो.' यह हिंदी कविता का सौभाग्य है कि उसकी नयी पीढ़ी में यह दृष्टि है. युवा कवयित्री रश्मि भारद्वाज ने अपने अनुभवों को जिस शिद्दत से अपनी कविताओं में ढाला है वह हमें उस पीड़ा का दीदार कराता है जिसे एक लड़की जिन्दगी भर झेलने के लिए अभिशप्त होती है. जैसे उस लड़की की अपनी कोई आवाज नहीं, उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं. रश्मि अपनी एक कविता में लिखती हैं - 'नोच कर फेंक दिये जाने के बाद भी उस आँगन से/ जहां से जुड़ी होती हैं नाभि नाल से/

हर उस हवा, हर उस राहगीर और हर उस बोली को निहारती हैं/ जो छू कर आती हैं उनका देश, उनके लोग और उनका आँगन/ हौले से गुनगुनाती यह गीत/ अगले जनम मुझे बिटिया ना कीजो' यह कैसी विडम्बना है कि त्रासदी इतनी हो कि उसे यह कहना पड़े कि ऐसा जनम कभी भी न आए. दुःख का सिलसिला अबाध और अनन्त है. इसीलिए तो दुनिया के सबसे खूबसूरत रिश्ते को सहेजने वाली 'माँ से कभी नहीं छूटता है घर/ घर हमेशा ही छोड़ देता है माँ को[5]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Editor of web magazine Meraki Patrika
2. Reporter and sub-editor in leading newspapers like Dainik Jagran, Aaj, etc.
3. Association with Muzaffarpur Doordarshan.
4. Poetry collection Ek Atirikt A has been honored by the Jnanpeeth Navlekhan Puraskar-2016
5. Mail.rashmi11@gmail.com